IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

भारतीय संगीत में स्त्रियों की भूमिका

पुष्पा
(सहायक आचार्य संगीत कंठ)
चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राज0)

प्रस्तावना

सृष्टि के स्वर्णिम विहार से लेकर प्रलय की काली संध्या तक संगीत का अस्तित्व स्वीकार करना ही पडता है। जीवन–ग्रंथ के पृष्ठों को कही से भी पलटिये, कोई भी अध्याय तो ऐसा नही जिसे संगीत से शून्य कह दिया जाए। आजकल का जीवन मानसिक तनाव से भरा हुआ है, हमें तरह–तरह के तनाव रहते है और इस प्रकार हम कोई भी काम मन लगाकर नही कर पाते अतः जरूरी है कि हम संगीत को अपने जीवन में लायें। संगीत ही है जो हमें भीतरी खुशी देता है और आज के समय में हर व्यक्ति संगीत सुन सकता है। संगीत की परिभाषा देते है हुए पं शारंगदेव जी ने अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में लिखा है किः–

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।1

अर्थात गीत वाद्य और नृत्य–इन तीनों का समुच्चय ही संगीत है। परन्तू भारतीय संगीत का अध्ययन करने पर यह आभास होता है कि इन तीनो में गीतो की ही प्रधानता रही है तथा वाद्य और नृत्य गीत के अनुगामी रहे है। एक अन्य परिभाषा के अनुसार सम्यक् प्रकार से जिसे गाया जा सके वही संगीत है। अन्य शब्दों में स्वर ताल शुद्ध आचरण हाव–भाव और शुद्ध मुद्रा के गेय विषय ही संगीत है। वास्तव में स्वर और लय ही संगीत का अर्थात गीत, वाद्य और नृत्य का आधार है।

संगीत का महत्व

संगीत में बहुत शक्ति होती है। संगीत एक ओर जहां बना सकता है वहीं एक और बिगाड़ भी सकता है। मनुष्य की तो बात ही क्या है, संगीत के माध्यम से पशु पक्षी व पेड़ पौधों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिको ने सिद्ध कर दिया है कि संगीत की सहायता से रोगों का भी उपचार किया जा सकता है।संगीत के मोहन सुर संगीत की मादकता का जीव जगत पर जो प्रभाव पड़ता है, वह किसी स` छिपा नही है। संगीत की स्वर लहरी पर मुग्ध होकर हिरण का व्याध के बाण से विद्व होना, यह हम बहुत सुनते आ रहे है। किन्तु वर्तमान युग में संगीत के प्रभाव से ˙ मनुष्य की व्याधियों का उपचार करने का प्रयोग भी होने लगा है। एक दिन भी ऐसा भी आ सकता है कि, जबकि विज्ञान चिकित्सा अपने रोगियों के लिए मिक्सचर, पिल या पाउडर की व्यवस्था न करकें दिन रात में उसके लिए दो तीन बार संगीत श्रवण का व्यवस्था पत्र देगें।

विश्व में जहाँ हर समय की गीत संगीत चाहे वेस्टन, अरबी या अन्य लेकिन इन सब के बीच जो आयाम, लोकप्रियता भारतीय गीत संगीत को मिली वह अद्वितीय है। आदि काल से अब तक गीत, संगीत हमारे परम्परा, संस्कार, रिवाज के उत्थान और तरक्की के गवाह रहे है। गीत, संगीत इंसान के लिए प्रकृति का एक अनुठा वरदान है, यह एक अद्भूत

उपहार है जो सिर्फ गिने चुने लोगों को ही मिलता है। गीत, संगीत दुर्लभ कला है और यह माता सरस्वती का प्रसाद है। संगीत के बिना मनुष्य पशु समान है जैसा कि आचार्य भतृहरि जी नें अपने ग्रंथ नीति शतकम में लिखा है कि–

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः । तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 2

इस श्लोक का अर्थ है– साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात नाखुन और सींघ रहित पशु के समान है। और यह पशुओं का भाग्य है कि वो उनकी तरह घास नही खाता।

नारी और संगीत प्रकृति और स्वभाव से एक–दूसरें के निकट है। अनादि काल से नारी एक–दूसरे के पूरक रहे है। नारी कंठ की बनावट प्रकृति ने कुछ इस तरह से की है कि उससे निकले स्वर स्वतः मधुर और मनमोहक हो जाते है।भारतीय शास्त्रीय संगीत, अनादि काल से, एक ऐसा क्षेत्र है जिसने कला के रूप में उच्च स्तर की प्रषंसा प्राप्त की की है। जैसा कि इतिहास में वर्णित है, इस क्षेत्र में पेषेवरों के रूप में पुरूषो और महिलाओं दोनो की भागीदारी देखी गयी है। हालांकि अधिकांष अन्य व्यवसायों की तरह, इस क्षेत्र में भी लिंग भेदभाव का उच्च स्तर रहा है। भारतीय संगीत कला क्षेत्र की कई महिला कलाकार तब तक बहुत अधिक प्रसिद्धि पाने में असमर्थ रहीं है, जब तक कि उन्हें विषेष रूप से गुरू के रूप मे पुरूष समर्थन ना मिलें। परम्परागत रूप से जब तक किसी महिला को गुरू षिष्य परम्परा (षिक्षक और उनके षिष्य की विरासत) की परम्परा के माध्यम से मार्गदर्षन नही मिलता, तब तक वे सुर्खियों में नही आ सकती। साथ ही, दर्षकों की स्वीकृति महत्वपूर्ण थी और महिलाओं कों अकेले होनें पर लोगों का दिल जीतने में मुषकिलें आती थी। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत के सभी क्षेत्रों – गायन, तालवाद्य और सितार, बांसुरी जैसे विभिन्न वाद्ययंत्रों के लिए सच है। उस्ताद या पंडित का समर्थन हमेंषा से ही उनके छात्रों के करियर में एक लम्बी भूमिका निभाता रहा है और इस क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने की चाह रखने वाली महिलाओं के जीवन में इसकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण रही है।

वैदिक काल में संगीत

भारतीय संगीत का इतिहास वैदिक काल से ही माना जाता है। मानव और संगीत का इतना गहरा संबंध है, जो उसके जन्म के साथ ही चला आ रहा है। प्राचीन साहित्य के उल्लेखों को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जहाँ तक धार्मिक अवसर का संबंध था। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय दोनों वर्ग अपने जातिगत धर्म के अनुसार यज्ञादि में भाग लेते थें। यज्ञ में धार्मिक संस्कारों पर कन्याओं एवं यजमानों की पत्नियों का संगीत से संबंध प्राप्त होता है। साम गायन जैसी धार्मिक अवसर तथा अन्य यज्ञों एवं धार्मिक संस्कारों के अवसरों से लेकर सामाजिक अवसरों तक के इतिहास में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यज्ञ इत्यादि के अवसर पर साम गायक पुरूषों के साथ–साथ उनकी स्त्रियाँ गायन वादन करती थी। दास कुमारियों द्वारा नृत्य तथा गाथाओं का गायन किया जाता था। संगीत सम्बन्धी सभी अवसरों पर महिलाओं का विषेष सहयोग रहता था। ऋग्वेद में स्त्रियों के गायन और नृत्य की चर्चा की गई है। वैदिक काल मे ं भी अपाला, लोपामुद्रा, घोषा आदि संगीत की अच्छी ज्ञाता थीं। महाकाव्य काल में राज्य सभाओं में भी स ंगीतकला में निपुण महिलाओं को राजकलाकार के रूप में नियुक्त किया जाता था जिसका जीवंत उदाहरण है वैशाली की नगर वधु आम्रपाली। गुलाम रसूल ने तो संगीत का दूसरा रूप नारी को माना है और कहा है कि –

नारी ही संगीत है, जाके है दो रूप। एक रूप तो गीत है, दूजा नृत्य स्वरूप।।3

शपथ ब्राह्मण

तैतरिया सहिंता आदि में भी साम गान स्त्रियों का विषेष कार्य माना गया तथा उस समय भी संगीत स्त्रियों का विषिष्ट गुण माना जाता था। महाभारत काल में भी स्त्रियों की संगीत में विषेष भूमिका रही है। जिसमें क्षत्रिय वर्ग की स्त्रियाँ विराट पर्व में नृत्य कला की प्रस्तुतियां एवं ब्राह्मण कूल की की स्त्रियों के साम गान आदि के उल्लेख मिलते है।

हरिवंष पुराण

ऐसा उल्लेख मिलता है कि यादवों का अत्यंत प्रिय गान छालिक्य गान था। श्री कृष्ण और यादवों ने साथ समुद्र यात्रा की थी, जिसमें सत्यभामा, रेवती के अलावा सौलह सौ रमणीयां भी श्री कृष्ण के साथ थी और यादवों ने अपनी स्त्रियों को भी साथ लिया था। क्रीड़ा के समय विभिन्न नृत्य गीतों का आयोजन हुआ था। इसके लिए अप्सराओं ने नृत्य, गीत, वाद्य में अपना योगदान दिया और नर्तकी रम्भा ने असारित नृत्य के बाद अपने नृत्य से सबको विमुग्ध कर दिया था।

घरानों में महिला कलाकार

ग्वालियर घराना

इसी काल में ग्वालियर घराना अपनी अष्टांग गायकी के लिए प्रसिद्ध रहा है, इस घरानें की षिष्य परम्परा बहुत बड़ी है, अन्य सभी संगीत घरानों का उद्गम भी इसी घरानें से माना जाता है। इसी घरानें काषी नाथ बुवा की षिष्या सुषीला मराठे, बलदेव जी बुवा की षिष्या डॉ. सुमति मुटाटकर, गजानन राव जोषी की षिष्या मांजरेकर आदि का नाम उल्लेखनीय है।

जयपुर अतरौली घराना

मोघुबाई कुर्डीकर और किषोरी अमोनकर का नाम प्रमुख है। जयपुर अतरौली घराने की प्रसिद्ध गायिका मोघुबाई कुर्डीकर को ''गान तपस्विनी'' के नाम से भी जाना जाता था। वह अल्लादिया खांन के प्रमुख षिष्य थी 20वी सदी की सबसे लोकप्रिय हिंदुस्तानी शास्त्रीय महिला गायिका थी। किषोरी अमोनकर उनकी बेटी और षिष्या थी।

बनारस घराना

गिरिजा देवी, बनारस घराने की प्रसिद्ध महिला शास्त्रीय गायिका थी, उन्हे 'ठुमरी की रानी' के नाम से जाना जाता था। गिरिजा देवी का जन्म 8 मई,1929 को हुआ था, उनका निधन 24 अक्टूबर, 2017 को हुआ था, वे शास्त्रीय और उप–षास्त्रीय संगीत की गायन करती थी, ठुमरी गायन को परिष्कृत करने और लोकप्रिय बानाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है, उन्हें साल 1989 में भारत सरकार ने कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था। साल 2016 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

स्त्रियों का योगदान

भारतीय शास्त्रीय संगीत, अनादि काल से, एक ऐसा क्षेत्र है जिसने कला के रूप में उच्च स्तर की प्रशंसा प्राप्त की है। जैसा कि इतिहास में वर्णित है, इस क्षेत्र में पेशेवरों के रूप में पुरुषों और महिलाओं दोनों की भागीदारी देखी गई है। हालाँकि, अधिकांश अन्य व्यवसायों की तरह, इस क्षेत्र में भी लिंग भेदभाव का उच्च स्तर रहा है। भारतीय शास्त्रीय कला क्षेत्र की कई महिला कलाकार तब तक बहुत अधिक प्रसिद्धि पाने में असमर्थ रही हैं जब तक कि उन्हें विशेष रूप से गुरु के रूप में पुरुष समर्थन न मिले।

परंपरागत रूप से, जब तक किसी महिला को गुरु–शिष्य परम्परा (शिक्षक और उनके शिष्य की विरासत) की परंपरा के माध्यम से मार्गदर्शन नहीं मिलता, तब तक वे सुर्खियों में नहीं आ सकतीं। साथ ही, दर्शकों की स्वीकृति महत्वपूर्ण थी और महिलाओं को अकेले होने पर लोगों का दिल जीतने में मुश्किलें आती थीं। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत के सभी क्षेत्रों – गायन, तालवाद्य और सितार, बांसुरी जैसे विभिन्न वाद्ययंत्रों के लिए सच है। उस्ताद या पंडित का समर्थन हमेशा से ही उनके छात्रों के करियर में एक लंबी भूमिका निभाता रहा है और इस क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने की चाह रखने वाली महिलाओं के जीवन में इसकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण रही है। हालांकि, महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए किसी गुरु का समर्थन जरूरी नहीं था। ऐसे कई उदाहरण हैं, जब बेहतरीन प्रदर्शन करने के बावजूद महिलाओं को पहचान नहीं मिली और इस तरह, उनके रिकॉर्ड मौजूद नहीं हैं।

सफलता के उदाहरण

कुछ उल्लेखनीय महिला कलाकार जिन्हें व्यापक स्वीकृति मिली उनमें गौहर जान, अख्तरी बाई फैजाबादी, मोगुबाई, कुर्दीकर और केसरबाई केकर शामिल हैं। गौहर जान देश की पहली रिकॉर्डिंग आर्टिस्ट थीं। ग्रामोफोन 1900 के दशक की शुरुआत में भारत आए और वह पहली कलाकार थीं, जिनका गायन रिकॉर्ड किया गया। इसलिए उन्हें ष्ग्रामोफोन गर्लष कहा जाने लगा। उनका उदाहरण बहुत दिलचस्प है, खासकर इसलिए क्योंकि पितृसत्तात्मक ढांचे पर आधारित इस क्षेत्र में, उपमहाद्वीप की पहली व्यावसायिक रूप से रिकॉर्ड की गई कलाकार के रूप में एक महिला का उदय बहुत सराहनीय है। साथ ही, उनके उदाहरण ने कई वेश्याओं को प्रेरणा दी, जिन्होंने रिकॉर्ड के लिए गाना शुरू किया। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, समाज में वेश्याओं का बहुत सम्मान नहीं किया जाता था और उन्हें नीची नजर से देखा जाता था। इस प्रकार, भारत के केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 1946 में एक अधिसूचना जारी की, जिसमें वेश्याओं को ऑल इंडिया रेडियो के लिए गाने से मना किया गया, जिससे उनकी बढ़ती आकांक्षाएं अचानक रुक गईं (संगीत साधना, एनडी)। अख्तरी बाई फैजाबादी बेगम अख्तर के नाम से मशहूर थीं और उन्हें मल्लिका–ए–गजलब की उपाधि मिली थी। उनकी मां मुश्तरी बेगम एक तवायफ थीं। वह गौहरजान से प्रेरित थीं और सार्वजनिक प्रदर्शन करने वाली पहली महिलाओं में से एक थीं। हालाँकि उनके विवाहित जीवन ने उन्हें हतोत्साहित किया जिसके कारण उन्होंने शुरू में गायन छोड़ दिया, लेकिन वह सभी बाधाओं को तोड़ते हुए वापस मैदान में लौट आईं। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म श्री और पद्म भूषण पुरस्कार (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया, साथ ही 1972 में गायन के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया ।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, इन कुछ महिलाओं के अलावा, इस सांस्कृतिक क्षेत्र में संरचनात्मक पदानुक्रम में हमेशा पुरुष शीर्ष पर रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसी संरचनाओं को शायद ही कभी टकराव या चुनौतियों का सामना करना पड़ा हो। हालांकि, पिछली सदी के उत्तरार्ध से, इस क्षेत्र को और अधिक समावेशी बनाने के लिए कुछ आधिकारिक प्रयास किए गए हैं। हालांकि प्रगति की गति बहुत धीमी थी, लेकिन हर छोटे प्रयास को गिना जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, 1952 में, केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री बीवी केसकर ने इस निर्देश को रद्द कर दिया और आदेश दिया कि सभी महिला मुस्लिम गायिकाओं को ष्बेगमष और सभी महिला हिंदू गायिकाओं को ष्देवीष कहा जाए ।

2018 में प्रतिष्ठित तानसेन सम्मान जीतने वाली श्पहली महिला सितार वादकश मंजू मेहता ने हाल के वर्षों में प्रसिद्धि प्राप्त की है। शास्त्रीय संगीत में अपनी अद्भुत और सराहनीय स्थिति के बावजूद उन्होंने जिस रूढ़िवादिता का सामना किया, उसके बारे में वे मुखर रही हैं। और शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में सुधा मुद्गल और विदुषी कौशिकी चक्रवर्ती के नामों को कभी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता (जनवरी, 2020)।

निष्कर्ष

21 वीं सदी में , दर्शकों के निर्माण में डिजिटल मीडिया की भूमिका को कभी कम नहीं आंका जा सकता। यह उन महिला कलाकारों के करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में काम करना शुरू कर दिया है जो शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करना चाहती हैं। यह सोशल मीडिया ही है जिसने प्रसिद्ध महिला बांसुरी वादक रसिका शेखर की लोकप्रियता में वृद्धि में योगदान दिया है। अन्य महिला वादक और शास्त्रीय गायिकाएँ पारंपरिक पदानुक्रम से परे जाकर अपने स्वयं के दर्शक बनाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग एक मंच के रूप में करने लगी हैं। नंदी बहनें (अंतरा नंदी और अंकिता नंदी) सोशल मीडिया पर बहुत लोकप्रिय हो गई हैं और उनके गीतों का उपयोग लोग इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर रील बनाने के लिए करते हैं।

महामारी के बाद से यह चलन और भी तेज हो गया है, जब कई लोगों ने अपने खुद के ल्वनज्न्इम चौनल और इंस्टाग्राम और फेसबुक अकाउंट शुरू किए हैं और अपनी प्रतिभा से कमाई कर रहे हैं और साथ ही एक प्रशंसक आधार भी बना रहे हैं। सोशल मीडिया की ताकत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और भारतीय शास्त्रीय संगीत में महिला

कलाकार जो इस क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करना चाहती हैं और गायिका या संगीतकार बनना चाहती हैं, आज की दुनिया में उन्होंने खुद को कलाकार के रूप में स्थापित करके अपनी खुद की कहानी गढ़नी शुरू कर दी है।

पं0 विष्णुनारायण भातखंडे जी ने संगीत की महता बताते हुए लिखा है कि–

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च|
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद|| 4

हे नारद! मैं न तो वैकुंठ में ही रहता हुं और न योगियों के हृदय में ही रहता हुं| तो वहीं रहता हूं, जहां मेरे भक्त प्रेमाकुल होकर मेरे नाम का संकीर्तन किया करते हैं||

सन्दर्भ :–

1. संगीत रत्नाकर– पं शारंगदेव
2. भतृहरि– नीतिशतकम्
3. प. गुलाम रसूल खां
4. हिन्दूस्तानी संगीत पद्धति– कमिक पुस्तक मालिका– पं0 विष्णुनारायण भातखंडे जी
5. नाट्य शास्त्र–आचार्य भरत का नाट्य शास्त्र